बाल पोटली

स्मृति चौधरी (स.अ.)
उ. प्रा. विद्यालय सबदलपुर
बालियाखेड़ी, सहारनपुर

उद्देश्य– वर्तमान समय में विद्यार्थियों के रचनात्मक कौशल को बढ़ावा देने पर विशेष बल दिया जा रहा है। सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों और अध्यापकों को राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पहचान बनाने तथा अपने रचनात्मक कार्यों को प्रदर्शित करने के अवसर प्रदान करने के उददेश्य से बाल पोटली को विकसित करने का कार्य प्रारम्भ किया गया। यह संकलन कक्षा 1 से 8 तक के परिषदीय विद्यालयों के विद्यार्थियों हेतु निर्मित किया गया है। इस संकलन को बनाने का मुख्य उद्देश्य सरकारी विद्यालयों में अध्यनरत विद्यार्थियों में रचनात्मक एवं कलात्मक कौशल का विकास करना, विद्यार्थियों के बौद्धिक स्तर एवं शैक्षिक उन्नयन में वृद्धि करना, विद्यार्थियों का अपने अध्यापकों के प्रति संवेगात्मक लगाव पैदा करना, विद्यार्थियों के अभिभावकों का अध्यापकों से सामाजिक और मानसिक जुड़ाव करना अभिभावकों एवं बच्चों में आत्मविश्वास की वृद्धि करना और साथ ही इस संकलन द्वारा बच्चों और अध्यापकों के अच्छे व सफल कार्यों को राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पहचान दिलाना है।

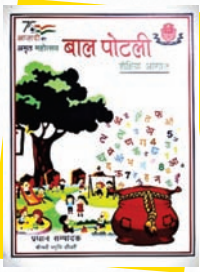

क्रियान्वयन– इस संकलन 'बाल पोटली' में अध्यापकों से बाल कविताएं लेकर भाषा संरचना त्रुटि रहित करते हुए उन कविताओं पर खुले छोर के प्रश्नों का निर्माण किया गया है ताकि विद्यार्थी उन कविताओं से अधिकतम लाभ उठाते हुए शैक्षिक एवं मनोवैज्ञानिक उत्कृष्टता प्राप्त कर सकें। इस संकलन में प्रत्येक अध्यापक की कविता के साथ, उसके विद्यालय के विद्यार्थी द्वारा बनाए गए पोस्टर, विद्यार्थियों की फोटो, कक्षा एवं विद्यालय का नाम लिखा गया है जिससे पुस्तक में अपनी रचना को देखकर उनको प्रसन्नता हो और वे नवीन कार्यो को करने हेतु प्रोत्साहित हों। इस कार्य द्वारा विद्यार्थियों में आत्मविश्वास की वृद्धि करने एवं उनके अभिभावकों का विद्यालय तथा अध्यापकों से लगाव बढ़ाने का प्रयास किया गया। कविताओं और रचनाओं के संकलन के साथ–साथ कविताओं के लिए वीडियो निर्माण एवं क्यू आर कोड का निर्माण किया गया। जिसके द्वारा अध्यापकों के कलात्मक, रचनात्मक एवं तकनीकी उन्नयन पर भी कार्य किया गया।

प्रत्येक विद्यालय अथवा जिला स्तर पर इस तरह का संकलन वर्ष में एक बार निकालने पर विद्यार्थियों, अभिभावकों एवं अध्यापकों को शिक्षा के प्रति स्वप्रेरित कर सकते हैं एवं शैक्षिक उन्नयन के उच्चतम स्तर को प्राप्त कर सकते है। सभी जानते हैं कि शिक्षा के तीन मूल स्तंभ शिक्षक, विद्यार्थी एवं अभिभावक होते हैं। यदि शिक्षक और विद्यार्थी मिलकर 'बाल पोटली' जैसे उदारहण समाज के सामने रखते हैं तो निश्चित ही उनमें रचनात्मकता के साथ आत्मसम्मान और आत्मविश्वास में वृद्धि होगी। सरकारी विद्यालयों में शिक्षा का स्तर प्राइवेट विद्यालयों में दी जाने वाली शिक्षा के स्तर से कहीं अधिक है। यदि इस प्रकार क्षेत्र विशेष में शैक्षिक स्तर के प्रचार प्रसार के अधिक से अधिक अवसर प्राप्त हों तो अपने छोटे–छोटे नवाचारों द्वारा विद्यार्थियों और अभिभावकों को विद्यालय के साथ जोड़कर सभी शिक्षक एक नवीन भविष्य का निर्माण कर सकते हैं।

प्रभाव– प्रस्तुत संकलन का ऑनलाइन सर्वे करने पर यह ज्ञात हुआ कि प्रतिभागी विद्यार्थियों और अध्यापकों के कार्यों को राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर

पर पहचान मिली और देश–विदेश में भी उनके कार्यों की प्रशंसा की गयी। इस प्रकार समुदाय में सरकारी शिक्षा के लिए सकारात्मक वातावरण का निर्माण हुआ एवं सरकारी शिक्षा के प्रति सम्मान की भावना, विद्यार्थियों एवं शिक्षकों में परस्पर सहयोग एवं विश्वास की भावना में वृद्धि हुई। एक साथ कई विद्यालयों के इस कार्य में जुड़ने से वहां के विद्यार्थियों एवं अध्यापकों में नवीन ऊर्जा का संचार हुआ। वे रचनात्मक, कलात्मक एवं तकनीकी गतिविधियों में बढ़–चढ़कर प्रतिभाग करने लगे।